ONE-DOLLAR STORIES क्यों मौजूद है

सदियों से हमने लोगों को श्रेणियों में बांटा है: अच्छे और बुरे, अमीर और ग़रीब, पुरुष और महिला, स्वस्थ और बीमार। ये लेबल हमें पहचान बनाने में मदद करते हैं, लेकिन वे कभी यह नहीं बताते कि हम वास्तव में कौन हैं। वे केवल शॉर्टकट हैं। वे मुखौटे हैं। वे असली प्रश्न से बचने केतरीकेहैं: जब बाक़ी सब कुछ हटा दिया जाए, तो क्या शेष रह जाता है?

असली भेद सामाजिक नहीं है — वह अस्तित्वगत है।

अपने जीवन केएक बिंदु पर, मैंने संपत्ति और ग़रीबी, सफलता और असफलता, शक्ति और कमज़ोरी को देखना छोड़ दिया। मैंने कहीं अधिक स्पष्ट किसी चीज़ को देखना शुरू किया: आवश्यकता (necessity) और चाहत (need)। आवश्यकता आपको जीवित रखती है। चाहत आपको भटकाए रखती है। अधिकांश लोग इन दोनों को गड्डमड्ड कर देते हैं।

मैंने कुछ ऐसा सीखा जिसके बारे में बहुत कम लोग बात करते हैं।

मैंने वर्षों यह समझने में बिताए कि एक धनी व्यक्ति ग़रीबी का प्रबंधन कैसे कर सकता है — दुख नहीं, अभाव नहीं, बल्कि वह ग़रीबी जो आपको सिखाती है कि क्या आवश्यक है और क्या केवल शोर है। उस सीख ने सब कुछ बदल दिया। उसने रंगमंच को उतार फेंका। उसने भ्रमों को उतार फेंका। उसने इस विचार को उतार फेंका कि पैसा किसी भी चीज़ को परिभाषित करता है।

मैंने किताबें लिखीं, बहुत-सी किताबें।

1, 2, 5, 10, 50, 100, 500, 1200, 3000, 3800, 4200। कई लेखकों की तरह, मैंने भी उन्हें प्रकाशित करने, बेचने, रॉयल्टी गिनने, संख्याओं केमाध्यम से सफलता मापने की कल्पना की। फिर एक संकेत आया — स्पष्ट, तीक्ष्ण, निर्विवाद। उसने मुझसे कहा कि यह मेरा मार्ग नहीं है। मेरा काम कहानियां बेचना नहीं था। यह रिश्ते बनाना था।

लगभग सब कुछ मुफ़्त में दिया जा सकता है।

पैसा संपत्ति नहीं है। पैसा अर्थ नहीं है। पैसा पहचान नहीं है। वह केवल आवश्यकताओं केलिए एक व्यावहारिक साधन है। बाक़ी सब कुछ — ज्ञान, सत्य, कहानी — स्वतंत्र रूप से दिया जा सकता है।

इसीलिए वन-डॉलर स्टोरीज़ *(One-Dollar Stories)* का अस्तित्व है।

मैं किताबें बेचता नहीं हूँ। मैं उन्हें मुफ़्त में देता हूँ। बदले में जो मैं माँगता हूँ, वह है दोनों तरफ़ से हस्ताक्षरित एक डॉलर। न भुगतान केरूप में। न दान केरूप में। न व्यावसायिक लेन-देन केरूप में। बल्कि पहचान केएक कार्य केरूप में। एक

संज्ञानात्मक आदान-प्रदान। एक संकेत जो कहता है: मैं यहाँ था। मैंने यह प्राप्त किया। मैं इस रिश्ते को स्वीकार करता हूँ।

यह भाव सार्वभौमिक है।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका केराष्ट्रपति। पोप। किसी बहुराष्ट्रीय निगम के सीईओ। गली केमोड़ पर फल बेचने वाला। डॉलर वही रहता है। भाव वही रहता है। क्योंकि मूल्य क़ीमत से नहीं बनता। मूल्य रिश्ते से बनता है।

हम किताबें नहीं बेचते। हम रिश्ते बनाते हैं।

यही सार है। यही प्रणाली है। यही प्रोटोकॉल है। वन-डॉलर स्टोरीज़ का अस्तित्व इसलिए है क्योंकि कहानी ही वह एकमात्र संपत्ति है जो हमसे आगे जीवित रहती है। और क्योंकि एक अकेला भाव — एक डॉलर — संपूर्ण मानव अभिलेखागार को खोल सकता है।

Ferdinando Frega

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com